

❧ सन्ध्या ❧

(हिन्दी उर्दू लिपि में)

मिलने का पता : (१) विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय बिजबिहारा । (२) श्री के. एन. जूला : चूना मण्डी, नई देहली
फ़ोन : 276514 (३) नन्दलाल एण्ड सनज बुकसेलर्ज पक्काडंगा (जम्मू)

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

گائتری منتر

بھرگو، دے دے وے،

رہی مہی۔

رہیو یونا،

پر چوریات۔

हम सत् चित् और आनन्दरूप तीनों लोकों के
स्वामी, प्रकाश और प्रेरणा देनेवाले सर्वव्यापक,
सर्वरक्षक, दिव्य गुणों से सम्पन्न, मंगलमय सच्चिदा
देव के वरण करने योग्य विशुद्ध तेज का ध्यान करते
हैं। वह हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

”اوم بھور، بھوا،

سواہ۔ نت، سہ و تورا

ورے نیم۔

ارتھ:- ہم ست چیت اور آئندروپ تینوں لوگوں کے سوامی، پرکاش اور پریرنا دینے والے سروریاپک سرورکشیک، دیوگوں سے شیکت،
منگل میں شریہ دیو کے درن کرنے یوگیہ وشدھ تیج کا دھیان کرتے ہیں۔ وہ ہماری بدھیوں کو ست مارگ پر پریرت کرے۔

श्रीगणेशाय नमः

स्नानविधि

बायां पाद धोयें-ओं नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्-
त्तये सहस्रपादान्नि शिरोरुवाहवे । सहस्रना-
म्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे
नमः ॥

दायां पाद धोयें ओं नमः कमलनाभाय नम-
स्ते जलशायिने । नमस्ते केशवानन्त वासु-
देव नमोस्तु ते ॥ १२ कुर्लियोंसे मुखशोधन करें ।
अञ्जलि में जल उठा कर पढ गंगाप्रयागगयनैमि-
षपुष्करादितीर्थानि यानि भुवि सन्ति हरिप्र-
सादात् । आयान्तु तानि करपद्मपुटे मदीये

श्रीगणेशाय नमः

स्नानोद्घोष

बायां पाद धोयें-ओं नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्-
त्तये सहस्रपादान्नि शिरोरुवाहवे । सहस्रना-
म्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे
नमः ॥

दायां पाद धोयें ओं नमः कमलनाभाय नम-
स्ते जलशायिने । नमस्ते केशवानन्त वासु-
देव नमोस्तु ते ॥ १२ कुर्लियोंसे मुखशोधन करें ।
अञ्जलि में जल उठा कर पढ गंगाप्रयागगयनैमि-
षपुष्करादितीर्थानि यानि भुवि सन्ति हरिप्र-
सादात् । आयान्तु तानि करपद्मपुटे मदीये

प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलङ्कम् ॥

उसी जल سے منہ دھوئے

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति ॥ मा

नः शंसोऽअरुषो धूर्तिः प्रणञ्जल्यस्य । रक्षा

णो ब्रह्मणस्पते ॥ यज्ञोपवीतको हाथोंके अंगूठोंमें

रखकर ३ बार मन्त्र पढते धोयें ओं गायत्र्यै न-

मः । ओं भूर्भुवःस्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्

ओं ३ ॥ यज्ञोपवीतको प्रथम दाईं भुजामे फिर क-

एठमें डालें यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते-

र्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्न्यं प्रतिमुञ्च

शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ यज्ञो प-

वीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनयामि ॥

तीन आचमन करें... .. ओं ओं ओं

پر کھشالیہ نہ تو، ورنے اِن اے کلنگم اسی جل سے منہ دھوتے
ہوئے پڑھیں :-

ترتبتے، سنے یم، ترتم، ابو، سمانانام، بھوتی، مانا، ہتم سیدو۔

اُردو شعر، دھرتی، پراننگ، مرتیہ، رکھیا، برہمنس پتے

یگنوپیت کو ہاتھوں کے انگوٹھوں میں رکھ کر ۳ بار منتر پڑھتے

ہوئے دھویں :- اوم، اگا بترتے نماہ۔ اوم بھور بھواہ، سواہ

تت سو تورا، ور یے نیم، بھر گرو دیو سیدو۔ دیوی میسے۔ دھویو نماہ،

پڑھو دیات، اوم۔

یگنوپیت پہلے دائیں بھجیا میں پھر کٹھ میں ڈالتے ہوئے پڑھیں :-

یگنوپو یتیم، پر م یو تر م۔ پر جا پتریت، اسجہ پورستات، اگنیم

اگریم، پرتی پوجتہ شتو بھرم، یگنوپو یتیم، بل م استو، تے جاہ۔

یگنوپو یتیم اسی۔ یگنیک سے توا، اوپ، وی تے نہ، اوپ، نہ ہیامی

تین آچمن کرتے ہوئے پڑھیں :- اوم اوم اوم

माथे पर दो बार मार्जन करें... ॐ ॐ
 बायें हाथमें जल रखकर दायें हाथकी } ॐ भूः
 तर्जनी और अंगूठेसे नथनोंको शुद्ध करें }
 अंगूठे और अनामिकासे आंखोंको शुद्ध करें ॐ भुवः
 अंगूठे और कनिष्ठासे कानोंको शुद्ध करें... ॐ स्वः
 हथेलीसे नाभिको शुद्ध करें..... ॐ महः
 हथेलीसे ही हृदयको शुद्ध करें..... ॐ जनः
 सब अङ्गुलियोंसे सिरको शुद्ध करें... ॐ तपः
 अङ्गुलियोंसे ही दो कन्धोंको शुद्ध करें... ॐ सत्यम्
 प्राणायाम करें (प्राणायामकरनेकी विधि पृ १५।
 देखिये) ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः
 ॐ तपः ॐ सत्यम् । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
 देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
 ॐ आपोज्योती रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्व-

ماتھے پر دو بار چھینے مارتے ہوئے پڑھیں۔ اوم اوم
 بائیں ہاتھ میں جل رکھ کر دائیں ہاتھ کی ترجنی
 اور انگوٹھے سے نثنوں کو شدھ کرتے ہوئے پڑھیں اوم بھوہ
 انگوٹھے اور انامیکا سے آنکھوں کو
 انگوٹھے اور کنشٹھا سے کانوں کو شدھ کرتے ہوئے پڑھیں اوم مہاہ
 ہتھیلی سے ہر دیہ کو شدھ کرتے ہوئے پڑھیں۔ اوم جہاہ
 سب انگلیوں سے سر کو شدھ کرتے ہوئے پڑھیں۔ اوم تپاہ
 انگلیوں ہی دونوں کندھوں کو شدھ کرتے ہوئے پڑھیں اوم ستم

پرانایام کریں۔ پرانایام کرنے کی ودھی صفحہ نمبر ۱۵ پر دیکھیں۔

(نوٹ)

انگوٹھے کی ساتھ دالی انگلی کو ترجنی اور بیچ دالی انگلی کو مہما۔
 مہما کی ساتھ دالی کو انامیکا اور سب چھوٹی کو کنشٹھا کہتے ہیں۔

रोम् नमस्कार धरकर पढ़ें

५

नामस्कार کر کے پڑھیں :-

ओं ब्रह्मणेऽन्यादयः ॥ नमो अग्नये अप्सु-
षदे नम इन्द्राय नमो वरुणाय नमो वा-
रुण्यै नमोऽपां पतये नमोऽद्भ्यः ॥ उपस्थान करें

اوم برہمنو گنیا دیا۔ نوا گنیے، اپسو شدے، نمہ
یندرائے، نمو درونائے۔ نمو دار نیئے۔ نواپا پئیئے۔

نمو ادبھیاء۔

अवभृथे त्रिष्टुप् वरुणः ॥ उरुं
हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेत-
वा उ । अपदे पादा प्रतिधातवेकरुतापव-
क्ता हृदयाविधश्चित् ॥ हाथोंसे जलका ३ बार आव-
र्तन करें यमस्य राज्ञो जगती वरुणः ॥ ये ते श-
तं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता
महान्तः । तेभिर्नो देवः सविता बृहस्पति-
र्विश्वे देवा मरुतो मुञ्चन्तु स्वर्काः ॥

اپستھان کرتے ہوئے پڑھیں :- او بھر بھتے، تریشٹوپ،

دروناہ۔ اورم ہی راجہ درونشچکار۔ سوربائے،

پنھا منوویتہ، وا۔ اد۔ اپوے، پاوا، پرتہ۔ دھاتہ دے، یوکتا؛

وکتا۔ بہر دیا، وشنجت (دونوں ہاتھوں سے پانی میں تین او

تن کرتے ہوئے پڑھیں :-۔ سے راگینو جگتی دروناہ۔ یے تے شتم

३ बार जलाञ्जलि उठाकर बाईं तरफ पृथिवी
पर फेंकें ॥ निचाङ्कुणस्य शुनःशेषस्य यजुरापः ॥
सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु । दुर्मि-
त्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्वि-
ष्टमः ॥ अञ्जलि धरकर पढ़ें
यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्या-
श्चरामसि । अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपि-
म मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥
इस मन्त्रसे मिट्टीको पहिले जल छिड़ककर शुद्ध करें
फिर इसी मिट्टीके तीन भाग बनाकर पहिले भागप-
र जल छिड़कें (क)
ओं गायत्र्यै नमः ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितु-
र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः
प्रचोदयात् ओं ३ ॥ दूसरे भागपर जल छिड़कें (ख)
त्रितस्य महापांक्तिरादित्याः ॥ आदित्या अव हि

दुर्दने - ये सहेसम - गिगिह याह , पाथ , दते ता - महांता -
ते बहनो , दिलाह , से दता - बरसिपेत्रोशे दिला , मरु , मुग्नं तो
सुरकाह - (बाईं तरफ तीन जलाञ्जलि डालते हुं पڑहिये :-
न्याङ्कुण से - शून्यांशे पड़े , चापा - सुमित्रानि - कोपे , ओषधिया
सन्तु - दुराभ्या , तस्यै , सन्तु - पोसम , द्योशुष्मि - यम , द्योशु-
अञ्जलि उठाने करते हुं पڑहिये - यत् किं , चेदं , वरुण , दैव्ये , जने ,
अभिद्रोहं , मनुष्या - अचिती , यत्तव , धर्मा , युयोपि -
म मा , नस्तस्मादेनसो , देव , रीरिषः ॥
इस मन्त्रसे मिट्टीको पहिले जल छिड़ककर शुद्ध करें
फिर इसी मिट्टीके तीन भाग बनाकर पहिले भागप-
र जल छिड़कें (क)
ओं गायत्र्यै नमः ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितु-
र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः
प्रचोदयात् ओं ३ ॥ दूसरे भागपर जल छिड़कें (ख)
त्रितस्य महापांक्तिरादित्याः ॥ आदित्या अव हि

ख्याताधि कूलादिव स्पृशः । सुतीर्थसर्वतो
 यथानु नो नेषथा सुगमनेहसो वऽऽजतयः
 सुऽऽजतयो वऽऽजतयः ॥ तीसरे भागपर जल छि
 डकें (ग) मेधातिथेर्गायत्रं विष्णुः अतो
 देवा अवन्त नो यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथि-
 व्याः सप्त धामभिः ॥ तासर (ग) भागक ४
 हिस्से करके एक हिस्सा पूर्वकी तरफ जल में फेंकें
 भर्गस्य बृहती इन्द्रः ॥ यत इन्द्र
 भयामहे ततो नो अभयं कृधि । मघवञ्छ-
 ग्धि तव तन्न ऊतिभिर्विद्विषो विमृधो जहि ॥
 दूसरा हिस्सा जलमें दक्षिणकी तरफ फेंकें शासस्या-
 नुष्टमौ विमृध इन्द्रः ॥ स्वास्तिदा विशस्पति-
 र्वृत्रहा विमृधो वशी । वृषेन्द्रः पुर एतु नः
 सोमपा अभयंकरः ॥ तीसरा हिस्सा जलमें पश्चि-
 मकी तरफ फेंकें वि रक्षो वि मृधो जहि वि

दुसरे बھاگ پر جل چھڑکتے ہوئے پڑھیں :- ترے سے ہما
 پنکھر آدیا، آدیا، ادھی کھیا تا ادھی کولات ایہ و، پیر شاہ۔
 سو ترے سر تو، یقیناً، انو، نے شتما سوگر نے ہمہ سو، و
 اوتیاہ - (تیسرے حصہ پر جل چھڑکتے ہوئے پڑھیں :- میدھا
 ترے کا یرم، وشنو، اتو، دیوا، اونو تو، یتو، وشنو، وچکریے۔
 پر بھنویا، سپتہ دھام بھی - (اسی تیسرے حصے کے چار حصے
 کر کے ایک حصہ کو پورب کی طرف جل میں پھینکے ہوئے پڑھیں :-
 بھرگ سے، برہم تی، یندراہ، یتہ یندرہ، بھیا بھیے، اتو تو، ابھیم
 کر دھم، لگھون، چھگدی، تہ، تنہ، اوتی بھر، وددیشو، ورم دھو،
 جہی - (دوسرا حصہ جل میں دکن کی طرف پھینکے ہوئے پڑھیں :-
 شاسہ سیانوشو بھو، ورم دھ، یندراہ، سوستی دا، وشی تی، ورترا
 ورم دھو، وشی ورتیندرہ، پور، ایے تو ناہ، سومہ یاد، ابھینکرہ

वृत्रस्य हनू रुज । वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्-
मित्रस्थाभिदासतः ॥ चौथा हिस्सा जलमें उत्त-
रकी तरफ फेंकें वसुकस्य त्रिष्टुविन्द्रः ॥ इदं सु
मे जरितरा चिकिद्धि प्रतीपं शापं नद्यो व-
हन्ति । लोपाशः सिंहं प्रत्यंचमत्साः क्रोष्टा
वराहं निरतक्त कक्षात् ॥ अब दूसरी (ख) मिट्टी
और जलसे नाभिस्थानसे उपरके सब अङ्गोंको शुद्ध करें
यज्ञस्यानुष्टुप् मृत्तिका ॥ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते
विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे । उद्धृतासि वराहेन
कृष्णेन शतबाहुना ॥ मृत्तिके त्वां च गृह्णा-
मि प्रजया च धनेन च । मृत्तिके ब्रह्मद-
त्तासि कश्यपेनाभिमन्त्रिता ॥ मृत्तिके हर मे
पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् । वाचा कृतं
कर्मकृतं मनसा यत्तु चिन्तितम् ॥ मृत्तिके
देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम् । त्वया

तिसر حصہ بچھم کی طرف جل میں ڈالتے ہوئے پڑھیں :- درکھیو، و مردھو
جہی، دورتر سے ہنوردجہ و مینویم، ایندرا، و ترہن نہ ستر سیا
بھدا ستاہ۔ (چوتھا حصہ اتر کی طرف ڈالتے ہوئے پڑھیں
و سو کر سے تر شٹوپ، ایندراہ۔ یدم، سوے، جر تراہ
چکت ہی۔ پرتی پیم۔ شاپیم، ندیو ونہتی۔ لوپا شاہ، اسمہم،
پرتینچہ مرت ساہ۔ کرو شٹا۔ وراہم۔ نرتکتہ، لکھیات۔
دوسری ٹٹی اور جل سے نا بھی سے اوپر سب انگوں کو شدھ
کرتے ہوئے پڑھیں :- یگیانوشٹوپ، مرتکا۔ اشو کرانتے،
رتھ کرانتے، و اشو کرانتے۔ و سو ندھرے۔ اودھرتاسی و راہ
ہے نہ، کر شینہ نہ، شتہ باہونا، مرتکے، برہمہ تاسی کشر پی نہ
بھی منتر تا۔ مرتہ کے ہرے باپیم پن مسیا، دو تکر تم کرتہ و اچاکر
کرمہ کرتہ منہ سابت تو یجن تی تم مرتکے دے ہی مے پو شٹم، تو ی

हृतेन पापेन ब्रह्मलोकं ब्रजाम्यहम् ॥ १

पहिली (क) मिट्टीमें से थोड़ीसी मिट्टीका तिलक करें-
कुत्तस्यरुद्रो जगती

मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गौ-
षु मा नो अश्वेषु रीरिषः । वीरान्मा नो

रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा ह-
वामहे ॥ उसी (क) मिट्टीकी थोड़ीसी मिट्टीसे बायें

कन्देको शुद्ध कर ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः
उसी (क) मिट्टीसे दायें कन्देको शुद्ध करें ओं महः

ओं जनः ॐ तपः उसी (क) मिट्टीसे हृदयको
शुद्ध करें ॐ सत्यम् प्राणायाम अञ्जलि धरकर

तीर्थका आवाहन करें तीर्थस्यावाहनं कुर्यात्त-
त्प्रवक्ष्याम्यनन्तरम् । कुरुक्षेत्रं गया गङ्गा

प्रभासं पुष्कराणि च ॥ तीर्थान्येतानि सर्वाणि स्नानकाले भवन्त मे ।

नाथि लानकाल मवन्तु म ।

سرم، پرتھم۔ تو یا، ہرتے نہ، یا پے نہ، برہمہ لوکم،
 ورہا مے۔ اہلی مٹی میں سے حقوڑی سی مٹی کا تلک کرتے

ہوئے بڑھیں :- کوتہ سے ، رودرو جگتی ۔ مانس تو کے تینے
مانو آلو ، مانو گشتو ، مانو اشے شو ۔ ری رشاہ وراں ، مانو ،

رُودر، بجائیتو، ودر، مہ و شمتا، سد متا، ہوا ہے۔

ادم، بھو، ادم بھواہ ، ادم سواد (اُسی مٹی سے دِائیں کندھے
اسی سی سے کھوری کی سی بائیں کندھے کو سے ہے) پر ہیں

اِس مٹی سے سردہ کو شہدہ کرتے ہوئے پڑھیں:- ادم مہا، ادم جناہ، ادم سیاہ۔
اِس مٹی سے سردہ کو شہدہ کرتے ہوئے پڑھیں:- ادم سیتم۔

پرانام کر کے اجلی دھارن کرتی تھیں کادھیان کرتے ہو پڑھیں

گیا گنگا، پر جہاں، پشکرانی چتر تھانے تانی سترانی سنان کلا

یہ دوسرے

नमस्कार करें प्रपद्ये वरुणं देवमम्भ-
सां पतिमूर्जितम् ॥ याचितं देहि मे तीर्थ-
सर्वपापापनुत्तये । रुद्रान्प्रपद्ये वरदान्सर्वा-
नप्सुषदस्त्वहम् ॥ सर्वानप्सुषदश्चैव प्रपद्ये
प्रणतः स्थितः । देवमप्सुषदं वह्निं प्रपद्येऽथ
निसूदनम् ॥ आपः पुण्या पवित्राश्च प्रपद्ये
शरणं तथा । रुद्रश्चाग्निश्च सर्पाश्च वरुणस्त्वा-
प एव च ॥ शमयन्त्वाशु मे पापं पुनन्त्वेते
सदा मम । इत्येवमुक्त्वा कर्तव्यं ततः संमा-
र्जनं जले ॥ अब (क) मिट्टी और चलवर पानी
उठाकर पढ़ें । ओं अपां पतये विद्महे पाशपा-
णये धीमहि । तन्नो वरुणः प्रचोदयात् ३ ॥
नदीमें उतरते पढ़ें ओं तत्सद्रूप अथ तावत्तिथा-
वय-मासस्य-पक्षस्य तिथौ-आत्मनो वाङ्मा-

नमस्कार करते ہوئے پڑھیں :- پرپدے، درونم، دیوم،
ابھوسام، یتیم اور جیتیم یا جیتم، اے ہی مے برکتھم سروپایہ،
بنوئیے۔ رُودران، پرپدے، دروان سروان، اپسوشد
ستوہم۔ سروان اپسوشد سچو، پرپدے۔ پرنتاہ۔ رستھتا
دیوم، اپسوشد، دہنم۔ پرپدے گھنی سودنم، آپا، پونیا
پوتراشیچ۔ پرپدے شرنم تھتا۔ رُودراشی، گنشیچ، سرپاشیچ
دُردنش، توایہ، یے دچ۔ شرمین توآشہ، مے پاپم پُون تے
توے سدا، مہ۔ یتے دم، دُودکتوا، کر تویم، تہا، سمارجنم،
جلے۔ (مٹی) کا ایک حصہ جو باقی بچا پڑا ہے۔ انجلی میں پانی بہت
اُٹھا کر پڑھیں :- اوم۔ اپام پتے یے، ودھییے، پاشہ پانیے،
ذمی ہی۔ تن نو، دُودناہ، پرچو دیات (ندی میں اترتے ہوئے پڑھیں)
اوتہ ست برہم اے تاوت تہقوا اے، ماسہ سے یکھیے تھو

नः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीनाराय-
णप्रोत्यर्थं वितस्ताप्रवाहे स्नान-

महं करिष्ये । मनमें यह निश्चय करना कि नदी मु-
झे स्नानकी आज्ञा देती है कि ओं कुरुष्व ॥

चलूँ जलको नदीमें फेंककर विष्णुका ध्यानकरके और
जलपर 'ओं' लिखकर गोतह मारें ॥

मेधातिथेः काण्वस्य गायत्रं विष्णुः ॥

ओं तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सू-
रयः । दिवीव चतुराततम् ॥ तद्विप्रासो

विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । विष्णो-
र्यत्परमं पदम् ॥ माथेपर सात मार्जन करें ओं

भूः१ ओं भुवः२ ओं स्वः३ ओं महः४ ओं

जनः५ ओं तपः६ ओं सत्यम्७ ।

प्राणायाम करके पूर्वकी तरफ उपस्थान करें

ہم، وائمنہ ۵۔ کابل، پارچہ، پاپہ، نوارنا تھم۔ شری
نارائین، پری تیر تھم، دستا، پردا ہیے رستا نم اہم، کرشیے۔
(من میں نیچہ کر کے کہندی مجھے سنان کرنے کی آگیا دیتی ہے)
ادم کورشو۔

ہاتھ میں لیا ہوا پانی ندی میں پھینک کر پانی پر ادم (35)
لکھ کر غوطہ مارتے ہوئے پڑھیں :-

ادم ت، دشنو، پر مم پدم، سداپشن تی، سوریاہ۔ دیو دیو
پچھشور، آتہ تم۔ ت، دیپراسو، دیپ نے یو، جاگر دانسا،
سمندھتے دشنوریت، پر مم، پدم (ہاتھ پر سات بار جھپٹے
مارتے ہوئے پڑھیں :- ادم، بھوہ۔ ادم بھواہ، ادم
سواہ۔ ادم ہباہ۔ ادم جباہ۔ ادم تباہ۔ ادم سیتہ۔
پرانایام کر کے اسپتھان کرتے ہوئے پڑھیں :-

गत्तृप्यतु ३ ॥ किनारेपर चढकर पहिली अवशिष्ट
[क] मिट्टीका तिलक लगाते मन्त्र पढ़ें, फिर उसको
तत्कालही जलसे धो डालें यत्त्वगस्थिगतं पापं
जन्मान्तरकृतं च यत् । तन्मे हरस्व कल्याणि
सूर्धि स्पर्शेन वैष्णवि ॥ वखोंको जल छिड़ककर
धारण करें विश्वामित्रस्य त्रिष्टुप् विश्वेदेवाः ॥

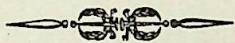
युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेया-
न्भवति जायमानः । तन्धिरासः कवय उन्न-
यन्ति स्वाध्योश्मनसा देवयन्तः ॥

गोविन्देति सदा स्नानं गोविन्देति सदा जपः ।
गोविन्देति सदा ध्यानं सदा गोविन्दकीर्तनम् ॥
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे गोविन्द गोविन्द र-
थांगपाणे । गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण गो-
विन्द गोविन्द नमो नमस्ते ॥

इकन रे पर चढ़ करानी बिजी भूँटी को मात्ते पर लका कर बहर से
मिटते हुँके पढ़ें (रित, लोक, अस्थि, कर्म, पाप, जन्म, मृत्यु,
कर्म, जन्म, रित, तन, मे, हर, सु, कल्याणि, त्रिष्टुप्, विश्वेदेवाः,
विष्णु, (दुस्तरों को जल चढ़ा कर देहान्तर करते हुँके
पढ़ें :- यो, सु, वासा, प्रदित, आगत, से, ओ, शरी या
ज्योती, जाया माना, तन्दी राह, को, आ, नन्ति, सु, आहो
मन, सा, दिव्यताह -

(बेहोश, सुख, का, देहान्तर करते हुँके पढ़ें :- को, नन्दि, ती,
सा, सन्तन, को, नन्दि, ती, सा, ज्वा, को, नन्दि, ती,
सा, देहान्तर, सा, को, नन्दि, को, नन्दि, को, नन्दि, हर,
मुरारे, को, नन्दि, को, नन्दि, पाने, को, नन्दि, को, नन्दि,
कीर्तन, को, नन्दि, को, नन्दि, नमो, नमस्ते ॥

॥ सन्ध्योपासनप्रारम्भः ॥



ॐ
सन्ध्या

سُورِیہ بَکوان کو مُسکار کرتے ہوئے پڑھیں :-

सूर्यके सन्मुख नमस्कार धरकर पढ़ें ओं श्रीमहा-
गायत्र्यै नमः । सावित्र्यै नमः । सरस्वत्यै नमः ॥

ओं प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा गायत्रं छन्द एव
च । देवोऽग्निर्व्याहृतिषु च विनियोगः प्रकी-
र्तितः ॥ प्रजापतेर्व्याहृतयः पूर्वस्य परमेष्ठि-
नः । व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्ममक्षरमो-
मिति । व्याहृतीनां समस्तानां दैवतं तु
प्रजापतिः । व्यस्तानामयमग्निश्च वायुः सूर्यश्च देवताः ॥ छन्दश्च व्याहृतीनामेकान

اوم، پرندہ سے، ریشتر برہما۔ کائیترم، چھند، الوجبہ۔ دیوگنی
ویاہرتی شوچہ، وئی بولگاہ۔ پرکرتاہ۔ پر جاپتے، ویاہرتاہ
پورو سے، پریشٹھناہ۔ ویستا شچبو، سمتا شچہ، برہم،
اکھرم، اوم، ایتی، ویاہرتی نام، سمتا نام۔ دیوتم، تو
پر جاپتی۔ ویستا نام، ایم، اگنی شچہ۔ والو، سُریشچہ،
دیوتاہ۔ چھند شچہ، ویاہرتی نام، ایسے کاکھیرا نام۔ اوک
کھیرم۔ دکھیرا نام، ایتوکتی کھیرم۔ وشوا، میترا، ریشی چھند

राणामुक्ताख्यं द्व्यक्षराणामत्युक्ताख्यम् ॥ वि-
श्वामित्र ऋषिश्छन्दो गायत्रं सविता तथा ।
देवतोपनये जप्ये गायत्र्या योग उच्यते ॥
आवाहयामि गायत्रीं सर्वपापप्रणाशिनीम् ।
न गायत्र्याः परं जप्यं न व्याहृतिसमं हु-
तम् । आगच्छ वरदे देवि जपे मे सन्निधौ
भव । गायन्तं त्रायसे यस्माद्गायत्री त्वं
ततः स्मृता । अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च बृहस्पत्या-
प एव च ॥ इन्द्रश्च विश्वेदेवाश्च देवताः
समुदाहृताः । एवमार्घं छन्दो दैवतं विनि-
योगं चानुस्मृत्य ॥

गायत्र्या शिखामाबध्य गायत्र्यैव समन्ततः ।

आत्मनश्चापः परिक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात् ॥

अञ्जलि धरकर गायत्रीका आवाहन करें ।

कात्रम، یوتا، تھتا۔ دیوتو پیسے، جیسے۔ گائیتریا، یوگر،
اوجہ تے، آواہیامی، اکاترم، سروپا، پرناشی نم۔ نہ
گائیتریا، پریم، جیسیم نہ، دیاہرتی۔ سہم، ہوتم۔ آگچھ۔ ورے
دیوی جیسے، سنی دھو۔ جھہ، دگاین تم، تریا سے،
سیمات، گائیتری، قوم تہا، سمرتا۔ اگنی دایوشچہ،
سرسچہ، برہیتیا، پی، ایے دچہ۔ اندرشیہ، دوشو سے،
دیوشچہ، دیوتا، سم، وداہرتا۔ ایے دم، آرشم، چھندو،
دیوتم، ونے یوگم، چانوسمرتے۔ گائیتریا، رشکھا، آجھہ
گائیتریو، سن تہا، ہنشی پاہ، پرکھ پے، پرانا یا تم، کوریا
انجلی دھارن کرتے ہوئے پڑھیں :- او، جوسی، تی، گائیترا
آواہیہ، دیوانام آرشم۔ اوم ادجوسی، سہوسی، بلہم اسی، بھراجوسی،

دیوانام، دھامہ نام اسی، دیشو اوسرو اسی، سروایو بھوجو

ओजोसीति गायत्रीमावाह्य देवानामार्षम् ॥
 ओं ओजोसि सहोसि बलमसि भ्राजोसि
 देवानां धाम नामासि विश्वमसि विश्वायुः
 सर्वमसि सर्वायुरभिभूः ॥

प्राणायाम करें

प्राणवायु और अपानवायु के रोकनेको प्राणायाम कहते हैं। यह योगका एक विशेष अंग है। मन्त्र-जपके सहित जो किया जाता है उसको सगर्भ प्राणायाम, और मन्त्र जपनेके बिना जो किया जाता है उसको निर्गर्भ प्राणायाम कहते हैं ॥ यहां सगर्भ करना होता है ॥

(एक प्राणायाममें पूरक कुम्भक और रेचक किये जाते हैं।)

पूरक=दाईं अंगूठेसे दायाँ नथनेको बन्दकरके, बायाँ नथनेसे सांसको शनैः २ अन्दर खींचते जाना

प्रानायाम करें :-

प्रान दायो और पान दायो के रोकने को प्रानायाम कहते हैं - ये लोग का एक خاص अङ्ग है - मन्त्र सहित जो जब किया जाता है उसको सगर्भ प्रानायाम और मन्त्र जपने के बिना प्रान दायो पान दायो के रोकने को निर्गर्भ प्रानायाम कहते हैं - प्रान्तोसन्दध्यामि सगर्भ प्रानायाम किया जाता है प्रानायाम में पुरक कुम्भक और रेचक किये जाते हैं - पुरक दायो दायो अङ्गुठे से दायो नथने को बन्द करके दायो नथने से सांस को आहسته आहسته अन्दर खींचें - ओर रक्त वरुन के ब्रह्मजी का नाभी पर दध्याम करके एक बार मन्त्र पढ़ें -

कुम्भक किये - आनिका और अङ्गुठे से दोनों नथनों

چار پڑھیں ॥ اب ہر ایک مانت سے تین ۲ بار آچمن کرے

سایم کے تین آچمن :-

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च म
न्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यद्वा पा-
पमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्याम् । पञ्चा
मुदरेण शिश्रा अहस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्चि-
द्दुरितं मयीदमहं मामऽमृतयोनौ सत्ये ज्यो-
तिषि जुहोमि स्वाहा ॐ, ॐ, ॐ,

پہلا مانت تین آچمن :-

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च म-
न्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यद्वा पा-
पमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्याम् । पञ्चासु-

سایم کال کے تین آچمن کرتے ہوئے پڑھیں :-

اوم اگنی شچی، مانیو شچی، مینو پتہ شچی، مینیو، کرتے بھیاہ
پاپے بھیا، رکھنیتام۔ بیت اہنا، پاپیم، اکارشم، سناواچا
ہتا بھیا، پد بھیا، اودرینہ، رشتنا، اہست، اولوہیتو
یت کجھت، درتیم، می دم، اہم، مام امرتہ یونو، ستیہ، جیوتی
جوہری۔ سواہا، اوم، اوم، اوم۔

پربھات کی تین آچمن کرتے ہوئے پڑھیں :-

اوم، سوریشچی، مانیو شچی، مینو پتہ شچی، مینیو، کرتے
بھیاہ، پاپے بھیا، رکھنیتام۔ بیت راتریا، پاپیم، اکارشم
سناواچا، ہستیا بھیا، پد بھیا۔

दरेण शिश्रा रात्रिस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्चिद्
दुरितं मयीदमहं मामऽमृतयोनौ सूर्ये ज्यो-
तिषि जुहोमि स्वाहा ओं, ओं, ओं, ॥

मध्याह्नके तीन आचमन :-

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता
पुनातु माम् । पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म पूता
पुनातु माम् ॥ यदुच्छिष्टमभोज्यं वा यद्वा
दुश्चरितं । मम सर्वं पुनन्तु मामाऽऽपोऽसतां
च प्रतिग्रहं जुहोमि स्वाहा ओं, ओं, ओं, ॥
ओं आपो हि ष्ठा मयोभुवः । हृदय वा आकाश पर १
ओं ता न ऊर्जे दधातन । पादों पर वा नीचे की तरफ २
ओं महेरणाय चक्षसे ॥ ललाट पर ३
ओं यो वः शिवतमो रसः । ललाट पर ४
ओं तस्य भाजयतेह नः । पादों पर वा नीचे की तरफ
ओं उशती रि व मातरः ॥ हृदय वा आकाश पर ६

اددرينه، ششنا، راتری سس، تت، اولومپتو۔ ریت
کچت دورتم، می دم، ایم۔ مام امرتہ یونو، سورے۔

جیوتہ شہ، جہومی، سواہ۔ اوم۔ اوم۔ اوم
مدھیان کے تین آچمن کرتے ہوئے پڑھیں :-

اوم، اپاہ، پونن تو پر ہیم، پر ہتھوی، پوتتا پونا تو، مام۔
پونن نتو، برہمنس پتی، برہمنہ پوتتا۔ پونا تو، مام۔ ریت اور ہیش
سم، اعبہ جیم، وا۔ یدوا دوشچرتم۔ مہہ سرور، پونن تو، مام

آپو، استام جہ، پرہہ گہہم جوہومی، سواہ۔ اوم۔ اوم۔ اوم
ہر دیہ کو چھڑکتے ہوئے پڑھیں :- اوم آپو، ہیشٹھا، میو بھواد
پاؤں کو چھڑکتے ہوئے پڑھیں :- اوم تانہ اور جے، دوہاتنہ
نوما تھ کو چھڑکتے ہوئے اوم ہیہ رنائے، جھکے۔ اوم یواہ
ہشتو توراہ۔ پاؤں کو۔ اوم تے بھاجتے ہیہ ناہ۔

ॐ तस्मा अरंगमाम वः । ललाट पर ३० ७
 ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ । हृदय वा आकाश पर ८
 ॐ आपो जनयथा च नः । पादौ वानीचेकी तरफ ९
 अगले प्रत्येक मन्त्रसे प्रत्येक वार ललाट पर मार्जन करें

ॐ हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु
 जातः कश्यपो यास्विन्द्रः । या अग्निं गर्भं
 दधिरे विरूपास्ता न आपः शं स्योना भ-
 वन्तु ॥

यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्ष्यं या-
 अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति । या अग्निं ग० ॥
 यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृ-
 ते अवपश्यञ्जनानाम् । या अग्निं गर्भं ० ॥
 शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया त-

हरदिये को चھڑکتے ہوئے۔ اوم اوشہ تر، یہ و، ماتراہ۔
 ماتھے پر چھڑکتے ہوئے پڑھیں :- اوم، ایسے، کھیاے،
 جنوٹھ۔ پاؤں پر چھڑکتے ہوئے پڑھیں۔ ہرنبہ درناہ شوچہ
 یاہ۔ پادکا، یا سو جاتاہ۔ کتہ پو، یا سویندراہ۔ یا اگنم۔
 گرہم، ددھرے۔ وروپا، تانہ آپاہ۔ شمشوینا۔ بھونتو۔
 یاسام، دیوا، دوئے، کرنوتی، بھکشیم۔ یا انتہ رکھے،
 بھودھا۔ بھونتی۔ یا اگنم، گرہم، ددھرے، وروپا، تانہ
 آپاہ، شمشوینا۔ بھونتی۔

یاسام، راجا، ورونو، یاتی مدھیے، ستیانرتے، اولپشن
 جنانا یا اگنم، گرہم، ددھرے، وروپا، تانہ، آپاہ، شمش
 شوینا، بھونتی۔ اوم شوینہ، بھکشو، پشیتا پاہ، شوین
 تنوہیں :-

नवोपस्पृशत त्वचं मे । मधुश्च्युतः शुचयो
याः पावकास्ता न आपः शंस्योना भवन्तु ॥

ओं शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पी-
तये । शंस्योरभिस्रवन्तु नः ॥

ओं शन्न आपो धन्वन्याः । ओं शन्नः स-
न्वनूप्याः ॥ ओं शन्नः समुद्रिया आपः ।
ओं शम्भु नः सन्तु कूप्याः ॥

ओं आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन
नो घृतप्वः पुनन्तु । विश्वं हि रिप्रं प्रवह-
न्ति देवीः । उदिदाभ्यः शुचिरापूत एमि ॥

ओं इदमापः प्रवहत यत्किं च दुरितं म-
यि । यद्वाहमभिद्रोह यद्वा शेष उतानृतम् ॥

تہ، توچیم ہے۔ مدھو شچتاہ شوجہ یوایہ، پاوکاس تانہ، آپاہ تسم
سیونابھہ وشتو۔

اوم شنو دیویر ابھی شستے۔ آپو مجھ وشتو پی تہ سے رشم یویر ابھی
سرون توناہ۔ اوم شنہ آپو، دھنونیہ۔ اوم شنہ سن تو تو
پیہ۔ اوم شنہ سمودریا آپاہ۔ اوم شمنو ناہ، سنٹو کو پیہ۔

اوم آپو، اسمان، ماتہ راہ، شتو ندھین تو، گرہستہ نہ، نو اگرہستہ
پراہ، پونن تو۔ وشموم، ہی پرہرم، پروہنتہ دیوی۔ اودردا بھیاہ
شوجہ آپو تہ، یے می۔

اوم یدیم، آپاہ، پروہنتہ۔ بیت کم چیت۔ دو رتم می۔ یدو اہم
ابھی دو دروپہ، یدوا شتہ یہ اوتانرتم ۛ

ओं मुञ्चन्तु मा शपथ्याद्दथो वरुण्यादु-
त । अथो यमस्य पट्टीशात्सर्वस्माद्देवकिलिव-
षात् ॥ ओं यज्जाग्रद्यत्सुप्तः
पापमभिजगाम सर्वस्मान्मा तस्मादेनसः प्र-
मुञ्चतु ॥

ओं दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य
वाजिनः । सुरभि नो मुखा करत्प्र ए आ-
यूंषि तारिषत् ॥
ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः खिन्नः स्नातो मला-
दिव पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥
जलमें दो हाथ रखकर [अघमषण सूक्त] अर्थात् ऊप-
रका एक मन्त्र, और नीचेके तीन मन्त्र द्रुपदा० ऋतंच
समुद्रा० सूर्याचन्द्र० इन चार मन्त्रोंको पढ़ते जलका
आवर्तन (घुमाना) करें

ادم و پختنوا، شپه بھیات اھو ورنیات اوتہ۔ اھو، ہمسہ
پڑوی شات، سر و سوات، دیوکلہ شات۔
ادم ریت جاگرت۔ ریت سوپتاہ۔ پاپم ابھی جنگامہ۔ سر و سوات
ماستما تے نہ سا پر سو پختو۔

دھمی کراپ نو، اکارشم، جشنور، اشوسے، واجناہ
سور بھی نو۔ موکھ کرت پر نہ آؤ نشہ تار شست۔
ادم درو پدا دو۔ موٹو چاناہ۔ سوناہ، سناؤ، ملا دیو،
پوتم، پوترینے، واجیم، آپاہ، شو نہ نشو، میئے نہ۔

پانی میں دو ہاتھ رکھ کر اوپر دڑ
سندھ منتر پھر سے پڑھ کر آگے
کے تین منتر پڑھ کر جل کا آوتن کریں

ओं ऋतं च सत्यं चाभीक्षात्तपसोऽध्यजा
यत । ततो राज्यजायत ततः समुद्रो अण्वः
समुद्रादण्वादाधि संवत्सरो अजायत
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ ३
सातों मन्त्रोंसे सात बार माथेपर मार्जन करें
ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जन
ओं तपः ओं सत्यम् ॥

नीचेके मन्त्रसे तीन आचमन करें

ओं अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो
मुखः । त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्यो
ती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥
अब प्राणायाम करें

اوم رتم چه، سیتیم، چابھی دھات، تپتسو دھیہ جاتیہ رتو، راتر
اجانتہ، تہاہ۔ سمودرو، ارنواہ۔

سمودرات، ارنوات، اوسی، سموتسرو، اجانتہ، اہوراترائی
وید دھت۔ وشوسے، اشتووشی۔

سوریا، چندر سو، دھاتا۔ بھتا پوروم، اکلیپت۔ دوم،
چہ، پرکھویم، چانتہ، رکھیم، اھتو سواہ۔

ما تھے پر چھڑکتے ہوئے پڑھیں :-

اوم۔ بھوہ، اوم بھواہ۔ اوم سواہ، اوم ہوا، اوم جواہ، اوم
تپاہ، اوم سیتیم۔ (بچنے کے منتر سے تین آجپن کریں) :-

اوم، نکتہ چرخی، بھوتے شو، کوہا یام، وشوتو، موکھاہ۔ توم
نیکس توم۔ وشٹ کار۔ اپو جیوتی، رسو مترم، برہمہ بھورا، بھواہ
سوروم :- اب پرانا یام کریں :-

نہ سے تین وار سورج مغل کی طرف اٹھل کر تین جلا
اجیاں دے دے ॥ **उपस्थान**

ओं उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उ-
त्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्

ओं उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति के-
तवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्र-
स्य वरुणस्याग्नेः । आ प्रा द्यावापृथिवी अ-
न्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुचरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृ-

کاتری منتر سے تین بار سوریہ منڈل کی طرف اُچھال کر تین
جلائلیاں دے دیوں۔ ادبستھان کیجئے۔

ام اودویم۔ تمہ سپری، جیوتش پشنہ، اودہرم۔ دیو
دیوترا، سوریم اگنہ، جیوترا اودتم۔

اوم، اودویم، جاتہ ویدسم، دیوم، ونہتی، کے توادہ رشتے
وشواتے، سُریم۔

اوم چترم، دیوانام، اودگا فی کم، چکشور مہترے، ورونہ
سے، اگنہ۔ آپرا، دیاواہ۔ پرتھوی، انتہ رکھیم، سوریا
آتما، جگتس، تسقوشچہ۔

اوم رت پکشور، دیوہستم، پورستات، شکرم، اپچجرت
پشیمہ، شردہاہ شتم، جیوبیمہ، شردہاہ شتم،

एयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमऽ-
दीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्

شرداه، شتم، پر بردامه، شردها، شتم، آدی ناه، سیامه،
شردها، شتم، بھویشہ، شرداه، شتات،

ओं हँसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्गोता वे-
दिषदऽतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसहतसद्यो-
मसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥

اوم، ہنسا شوچی شت، و صونرتہ رکھیہ ست، ہوتا، ویدی شت
اتھی۔ دور نہ ست، نرشت، ورت، برتہ ست، دیومہ ست، ابجا
گو جا۔ رتی جا۔ اور جا۔ رتم بہت۔

ओं विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दध-
क्षपतावविहृतम् । वातजूतो यो अभिरक्षति
त्मना प्रजाः पिपत्ति बहधा विराजति ॥

اوم، بی بھراٹ، بریت پی و تو، سومنیم، مددایور، ددھت یکہ پتاؤ
برو تم۔ انجلی دھارن کر کے پڑھیں۔

अञ्जलि धरकर पठे

आनुष्टुबस्य सूक्तस्य त्रिष्टुबन्तस्य देवता । विश्वा-
त्मा पुरुषः साक्षाद्विनारायणः स्मृतः ॥

آنوشٹوبیے، سوکتے، ترشٹوبنتے، دیوتا۔ دتواتا، پورثہ،
ساکھیات رشی نارایناہ سمرتہ۔

ओं पुरुषमैधः पुरुषस्य नारायणस्यार्षम् ।

اوم پورش میدھا، پر مٹھے، نارایتے ارشم۔

ओं सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपा-

دا اوم سہسرتشرٹ پورثہ، سہسراکھیہ، سہسراپات۔

त् । स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशांगु-
 लम् ॥ १ ॥ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भ-
 द्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोह-
 ति ॥ २ ॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायां-
 श्च पुरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपा-
 दस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः
 पादोऽस्येहाभवत्पुनः । ततो विष्वङ्मथक्रामत्सा-
 शनानशने अभि ॥ ४ ॥ तस्माद्विराळजायत वि-
 राजो अधि पुरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पञ्चा-
 ङ्गमिमथो पुरः ॥ ५ ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा य-
 ज्ञमतन्वत । वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इ-
 धमः शरद्धविः ॥ ६ ॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पु-
 रुषं जातमग्रतः । तेन देवा अयजन्त साध्या
 ऋषयश्च ये ॥ ७ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सं-

سے مجھوں، وشنو، درتوا، اتی تیشٹ، دت گولم۔

(۱) پورٹہ، یے دیدم، سروم، یت مجھوں۔ یت چہ بھ دیدم۔ اُدتا تہ
تو سے شانائیت لے نا ئی روہتی۔

(۳) یے تادانے، ہی ماتو، جیا یان چہ، پورٹہ ۵۔ پاد دسیے،
دشوا، مجھوتا ئی۔ تریا دسیا مرتم، دوی۔

(۴) تریا پ، اوردو، اودیت پورٹہ، پاد دسے با بھوت پوناہ۔
تو، دیشوم۔ دیہ کرامت، سانشانٹہ نے ابھی۔

(۵) تسات وراٹھ، اجا یہ تہ، وراجو، ادھی، پورٹہ ۵۔ سہ جاتو اتی،
رجیتہ، پشچات مجھوں اھو پوراہ۔

(۶) یت پورٹینہ، ہوٹ دیوا، نگیم اتہ نوٹہ۔ وشنو، اسیاسیت آجیم
برکشمہ، ید، سہا، شرت، ہوئی ۵۔

۷، تم، نگیم، برہشی، پر دھین، پوروشتم، جاتم، اگر تادہ۔ تے نہ دیوا

भृतं पृषदाज्यम् । पृशुस्ताँश्चक्रे वायव्याना-
 रणयान्ग्राम्याश्च ये ॥ ८ ॥ तस्माद्यज्ञा-
 त्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दाँसि
 जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ९ ॥ तस्मा-
 दश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः गावो
 ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ १० ॥
 यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । सु-
 खं किमस्य कौ वाहू का ऊरू पादा उच्येते ११
 ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः ।
 ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ १२ ॥
 चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षुः सूर्यो अजायत ।
 मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥ १३ ॥
 नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो यौः समव-
 र्तत । पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ

ایہ قبیلہ، سادھیا، رشتہ نشیچہ ہے۔

(۸) تسما، یجیات، سرو ہوتاہ۔ سم بھرتم پرشت اسمیم پشوتنا
 چکرے، وایہ ویان آرنیان، اگر امیان چہ ہے۔

(۹) تسما، یجیات، سرو ہوتا، رچاہ، سامانی، جگرے۔ چھنداسی
 جگرے تسما، یہ جو، تسما، اجایتہ۔

(۱۰) تسما، اشوا، اجایتہ، یے کے چوہہ یا دتاہ، گادہ، جگرے
 تسما، تسما، جاتا، اجاویاہ۔

(۱۱) بیت پورشم، دیددھوہ، کتی دھا ویکلین، موکھم، کم، اکی، کو، باہو
 کا، اورد، پادا، اوجیے تے۔

(۱۲) برہمنو، موکھم، آسیت، باہو، راجہ نیاہ، کرتاہ۔ اوروت
 اسے۔ بیت دیش، پد بھاسم، شودردا، اجایتہ۔

(۱۳) چندرما، منسو، جاتش، چکھوہ، سورپو، اجایتہ، موکھات، اندر شچا

अकल्पयन् ॥ १४ ॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिसप्त
समिधः कृताः । देवा यद्यज्ञं तन्वाना अ-
ध्वन्पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त
देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ते ह ना-
कं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः स-
न्ति देवाः ॥ १६ ॥

ओं यज्ञाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य त-
थवैति । दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे
मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ १ ॥ येन कर्माण्य-
पसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धी-
राः । यदपूर्वं यक्ष्मन्तः प्रजानां तन्मे मनः
शिव० ॥ २ ॥ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च
यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऋते

نکشتر پراناات، دایور، اجایتہ۔

(۱۴) نا بھیا، آریست، اتمہ رکھیم، شرشنو، دیو، اسمہ ورتہ۔ بدھیم

مجدور شاہ، شر و ترات تھیا، لوکان۔ اکلیدین۔

(۱۵) اپتاسیا سن، پردھیس تری سپتہ، سمدھاہ، کرتاہ۔ دیواریت

یگیم۔ تنوانا، آبدن پورشم، پر شوم۔

(۱۶) یگے نہ، یگیم ایہ جنتہ، دیواس تانی، دھرمانی، پر تھ مانیا سن

تے ہہ نام۔ ہی مانا، سچنتہ، بتر، پور دے، سادھیاہ سن تی

دیواہ۔ برہمنس تر شٹوپ مناد

(۱۱) اومیت جاگرتو، دورم اددیے تی، دیوم، تدو، سو پتے،

تھئے، ویئے تے دورم، اکرم، جیوتی شام، جیوتراکیم، تن ے

مناد، یسوسنکلم استو۔

(۲) یے ذکر مانیہ یہ سو، منی شی نو، یگیم، کرنو نئی، ود تھے شو، ہواہ

किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव० ॥३॥

यंनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन

सर्वम् । येन यज्ञस्तायते सप्त होता तन्म

मनः शिव० ॥ ४ ॥ यस्मिन्नृचः साम यजूं

षि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः । य-

स्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शि० ५

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीषु-

भिर्वाजिन इव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं

तन्मे मनः शिव० ॥ ६ ॥ अथ य एष एत-

स्मिन्मण्डले पुरुषो यश्चैष हिरण्यमयः पुरुषः ।

अथ य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषोऽयमेव

स योऽयं दक्षिणेक्षन्पुरुषः ॥ उपस्थान करें

शुक्रियं हृदस्य । य उदगात्पुरस्तान्महतो

یت، اُورم، بھیم انتاہ، پر جانام، تن ے منہ، شو سنکپیم استو۔

(۳) یت پر گیانم، اوتہ، پے تو، دھرتی شچہ، یت جیوتر، انترام تم،

پر جاسو۔ یسات نہ رتے۔ کہ چہ نہ، کر مد، کر یہ تے، تن ے منہ

شو، سنکپیم استو۔

(۴) ایے نے دم، بھوتم، بھوونم، بھوشت، پر گرہی تم، امرتے نہ،

سردم۔ بیے نہ، بگس تا یہ تے پیت، ہوتا، تن ے، منہ، شو،

سنکپیم استو۔

(۵) ایسن رچاہ، سامہ، یہ جوشی ایسن پر شٹھا، رتھنا بجا و داراہ

ایسن چتم، سردم۔ ادم، پر جانام، تن ے منہ، شو سنکپیم استو۔

(۶) سوشا رتھر، اشوان یہ و۔ ین سوشیان، نے فی تے، بھی شو

بھر، دا جہنا۔ یہ دھرت، پر تی شٹھم۔ یت اجرم، جوشٹھم تن ے

منہ شو سنکپیم استو، اکہ، یہ، ایے نہ، یے تسمن منڈلے۔

अर्णवादिभ्राजमानः सरिरस्य मध्ये समामृ-
षभो रोहिताक्षः सूर्यो विपश्चिन्मनसा पु-
न्नातु यद्ब्रह्मावादिष्म तन्मा माहिंसीत्सूर्या-
य विभ्राजाय वै नमो नमः ॥

गायत्री जप

जपके आरम्भमें अङ्गन्यास करना होता है ॥

ओं = [अ + उ + म] अ ना भौ । [नाफको] उ ह-
दि । म शिरसि । [सिरको] ओं भूः पादयोः
ओं भुवः हृदि । ओं स्वः शिरसि ॥

करन्यासः

ओं भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । अंगुलियोंसे अंगूठोंको
ओं भुवस्तर्जनीभ्यां नमः । अंगूठोंसे तर्जनीयोंको
ओं स्वर्मध्यमाभ्यां नमः । अंगूठोंसे मध्यमाओंको
ओं महः अनामिकाभ्यां नमः । } अंगूठोंसे अना-
मिकाओंको

پُرتو، ایم یے دے۔ سویریم۔ دکھینے کہیں پورٹا۔ اوپر تھان کرتے
ہوئے پڑھیں۔ شوکریم دودر سے۔ یہ اودگرت، پورستات، نہتو
ارذات، بہ بھراجہ ماہ۔ سر سے ادریے، سے نام رشیو، روہ،
تاکیہاد، سورپو، وپشچت، منسا، پونا تو۔ بیت برہما، وادشمر، تما
ماہنسی تہ۔ شرپائے، دہرا جائے، ویسے، نموناہ۔

کائتری جب ودھی

جب کئے آریجہیں انگ نیاس کرنا ہوتا ہے۔ اوم "37" نا بھونامی
کو "3" ہردی (ہردی کو) "م" شری (سر کو) اوم بھوہ پاد پور پاد
کو۔ اوم بھوہ ہردی (ہردی کو) اوم سواہ۔ شری (سر کو)

کر نیاس

اوم بھوہ، انگوشٹھا بھیم نماہ (انگوٹھوں سے انگوشٹھوں کو پیش کریں)
اوم بھوہ، تریجنی بھیم نماہ (انگوٹھوں سے تریجنوں کو)۔

ओं जनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । } अंगूठोंसे कनि-
ष्टाओंको

ओं तपः सत्यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।
अंगूठोंसे हथलियों और हाथों की पीठों को स्पर्श करें ॥

अङ्गन्यासः

ओं भूः पादयोः । उं भुवः जान्वोः । घुठनोंको
ओं स्वः गुह्ये । मल छोड़नेके स्थानको उं महः
नाभौ । उं जनः हृदि । उं तपः कण्ठे । उं
सत्यं शिरसि । उं भूः हृदयाय नमः ।

ओं भुवः शिरसे स्वाहा । शिरको मध्यमाओं और
अनामिकाओंसे उं स्वः शिखायै वषट् ।
बोधीकी अंगूठोंसे उं महः कवचाय हुम् । वल्लो-
को दसों अंगुलियोंसे उं जनः नेत्राभ्यां वौषट् ।
नेत्रोंको तर्जनी मध्यमा और अनामिकाओं से उं तपः

अङ्गन्यासः
ओं भूः पादयोः । उं भुवः जान्वोः । घुठनोंको
ओं स्वः गुह्ये । मल छोड़नेके स्थानको उं महः
नाभौ । उं जनः हृदि । उं तपः कण्ठे । उं
सत्यं शिरसि । उं भूः हृदयाय नमः ।

ओं भूः पादयोः । उं भुवः जान्वोः । घुठनोंको
ओं स्वः गुह्ये । मल छोड़नेके स्थानको उं महः
नाभौ । उं जनः हृदि । उं तपः कण्ठे । उं
सत्यं शिरसि । उं भूः हृदयाय नमः ।

ओं भूः पादयोः । उं भुवः जान्वोः । घुठनोंको
ओं स्वः गुह्ये । मल छोड़नेके स्थानको उं महः
नाभौ । उं जनः हृदि । उं तपः कण्ठे । उं
सत्यं शिरसि । उं भूः हृदयाय नमः ।

अङ्गन्यासः

ओं भूः पादयोः । उं भुवः जान्वोः । घुठनोंको
ओं स्वः गुह्ये । मल छोड़नेके स्थानको उं महः
नाभौ । उं जनः हृदि । उं तपः कण्ठे । उं
सत्यं शिरसि । उं भूः हृदयाय नमः ।

सत्यमस्त्राय फट् । दायें हाथको शिरपरसे घुमाकर

उपरके करन्यासकी

तरह स्पर्श करें **ओं तत्सवितुर्वज्रं भ्यां**

नमः । वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः । भर्गो देवस्य

मध्यमाभ्यां नमः । धीमहि अनामिकाभ्यां

नमः । धियो यो नः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

प्रचोदयात्करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

उपरके अङ्गन्यासकी तरह करें

ओं तत्पादयोः । सवितुर्जान्वोः । वरेण्यं क-

ट्याम् । भर्गो नाभौ । देवस्य हृदये । धी-

महि कण्ठे । धियो नासिकायाम् । यः च-

क्षुप्तोः । नः ललाटे । प्रचोदयात् शिरसि ।

उपरके षडङ्गन्यासकी तरह करें **ओं तत्सवितुर्हृदया-**

य नमः । वरेण्यं शिरसे स्वाहा । भर्गो दे-

वस्य शिखायै वषट् । धीमहि कवचाय हुम्

नामाकाँ (سے) ادم تپاہ سیتہ استرائے چٹ دایں ہاتھ کو

سر سے گھما کر اوپر کو نیاس کی طرح پش کرے :-

ادم تن سرتور انگوشٹی بھیم نماہ - ورے نیم تر جینی بھیم نماہ -

بھرگو دیو سے مدھیم بھیم نماہ - دھی ہی انا مکا ہ بھیم نماہ - دھیو

یواہ ، کنی شٹھکا بھیم نماہ - پرچو دیات کر تله کر پر شٹی بھیم نماہ -

اوپر کے انگ نیاس کی طرح کیجئے :-

ادم تن پا دیوہ - سرتور جانوہ - ور نیم کٹیم - بھرگو نا بھوہ - دیو سے

ہرے - دھی بیئے کنٹھ - دھیو نا سکا نام - یاہ پکھوشوہ - ناہ

لاٹے - پرچو دیات - شرے -

اوپر کے شٹھ انگ نیاس کی طرح کرے :-

ادم تن ، سرتور ہر دیا کے نماہ ، ور نیم ، شر سے سواہ - بھرگو

دیو سے ، شٹھکائیے دھٹھ - دھی ہی کو چاکے - ہوم ، دھیو ،

धियो यो नः नेत्राभ्यां वैषद् । प्रचोदयाद-
 ऽस्त्राय फद् । अङ्गन्यासकी तरह करें ओं आपः स्त-
 नयोः । ज्योतिर्नेत्रयोः । रसो मुखे । अमृ-
 तं ललाटे । ब्रह्मभूर्भुवः स्वरों शिरसि ॥
 अब मुद्रायें वस्त्रसे हाथोंको छिपाकर करें । किसी
 की दृष्टिमें न करें ।

ओं 'तत्' समाय नमः । 'स' सम्पुटाय
 नमः । 'वि' वितताय नमः । 'तु' विस्ती-
 र्णाय नमः । 'व' द्विमुखाय नमः । 'रे'
 त्रिमुखाय नमः । 'णि' चतुर्मुखाय नमः ।
 'यं' पञ्चमुखाय नमः । 'भ' षण्मुखाय
 नमः । 'गो' अधोमुखाय नमः । 'दे' व्या-
 पकाञ्जलये नमः । 'व' शकटाय नमः ।

یوناہ ، نیترا بھیا ، دو شٹھ پرچو دیات ، استر اے بھٹ ۔

انگ نیاس کی طرح کیجئے :-

اوم ، آپاستہ نہ یو ۔ جیوتر نے تر یو ۔ رسو مو کھے ۔ امر تم للاٹے

برہم بھور بھواہ ، سوروم شہر سی ۔

اب نرائیں دستر سے ہاتھوں کو چھپا کر کریں ۔ کسی کی دشتی میں

نہ کریں ۔

اوم ، تت سماٹے نماہ ، "س" سمپوٹاٹے نماہ ۔ "و" ویتہ تاٹے

نماہ ۔ "تور" ویت تر نماٹے نماہ ۔ "و" دو مو کھاٹے نماہ "ے"

تر مو کھاٹے نماہ ، "نی" چتر مو کھاٹے نماہ "یم" پنچ مو کھاٹے

نماہ "بھہ" شن مو کھاٹے نماہ ۔ "رگو" ادھو مو کھاٹے

نماہ "دے" ویا پکا نچلیٹے نماہ "و" شکٹاٹے نماہ ۔

‘स्य’ यमपाशाय नमः । ‘धी’ ग्रन्थिकायै
नमः । ‘म’ संमुखोन्मुखाय नमः । ‘हि’
विलम्बाय नमः । ‘धि’ मुष्टिकायै नमः ।
‘यो’ मीनाय नमः । ‘यो’ कूर्माय नमः ।
‘नः’ वराहाय नमः । ‘प्र’ सिंहाक्रान्ताय नमः
‘चो’ महाक्रान्ताय नमः । ‘द’ मुद्गराय नमः
‘यात’ पल्लवाय नमः ॥ प्राणायाम करें
दायें हाथसे जलको उठाकर जलमें छोड़ते पढ़ें

ॐ अस्य श्रीतत्सवितुरिति मन्त्रस्य विश्वामित्र
ऋषिः । गायत्रं छन्दः । सविता देवता । आ
त्मनो वाङ् मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं ध-
र्मार्थं काम मोक्षार्थं श्रीमाहागायत्री सहस्रजपे
(एक मालाजपे) दशांशजपे) विनियोगः ॥

नमस्कार धरके पढ़ें

अथ ध्यानम् । मुक्ता विद्रुमहेमनीलधवलच्छा-

”سے“ میرا پاشائے نماہ۔ ”دھی“ اگر نتھ کائیے نماہ ”مہ“ سن موکھو
 نوکھائے نمہ۔ ”ہی“ دلجھائے نماہ۔ ”دھی“ موٹھی کائیے نماہ۔
 ”یو“ ہی نائے نماہ۔ ”یو“ کورمائیے نماہ۔ ”نماہ“ درہائے نماہ۔ ”پر“
 رسم ہارنٹائے نماہ۔ چوہا کرائٹے نماہ۔ ”دو“ موڈگرائے نماہ
 ”یات“ پلہ وائے نماہ۔ (پرانا یام کریں)

دائیں ہاتھ سے جل کو اٹھا کر جل میں چھوڑتے ہوئے پڑھیں :-
 اوم، اے شری تریت سوتور، تیری منتر سے، دشواہتر رشی ۵۰ کا تیرکا
 چھندہ، ستودا دیتا۔ آتمندو انگ منادہ، کایو پار جتہ، پاپہ نوار نار
 دھرار تھ کامہ موکھیا رتھے۔ شری مہا کائتری سہسرجے داکہ
 مالا ہے، دش نشہ ہے۔ رجنہ یوگا ۵۔
 منسکار کر کے پڑھیں :-

اتھ دھیانم۔ مٹوکن، ودر دمرہ، پے نہ، نیلہ دھولہ، چھائیے، مٹوکیے

यैर्मुखावैस्त्रीक्ष्णैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां त-
त्त्वात्मवर्णात्मिकाम् । गायत्रीं वरदाभयां
कुशकरां शूलं कपालं गुणं शङ्खं चक्रमधार-
विन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

अञ्जलि धरकर पठें ॥

आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ।
गायत्रि छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोऽस्तुते ॥

ओं भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ १०८ ॥
मालाको सिरपर रखकर प्राणायाम करें ।

देवा गातुश्रोत्रियाः

ओं देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित ।
मनसस्पत इमं देवयज्ञं स्वाहा वाते धाः ॥
तर्पणके बचे जलसे माथेको छिड़कायें ।

تری کہنے، یوکتام، بندو، بندھ رہنہ موکٹام، تو اتھ ورناتکام۔
کایترم، وردا بھیا، گوشہ کرام، شولم۔ کپالم گوتم شکھم حکیم
اتھار، بندیکلم، ہتھئے دہنیم بھجے۔

انجلی دھر کرتیں بار پڑھیں :- آگے چھ وردے، دیوی، ترکیرے
برہمہ دادنی، کایتری، چھندسام، ماتر برہمہ یونے، نموستوتے۔

جب

اُم بھور۔ بھواہ۔ سوہت۔ سوتور، وری نیم، بھرگ، دیوے۔ دھی ہی
دھیو، یونا پرچو دیات۔ اُم۔ ۱۰۸۔ مالاکو سیر پر رکھ کر پرائیام کریں
ترپ کرتے ہوئے پڑھیں :-

دیوا کا تو شر دتہ ریاء، اُم، دیوا، اکا تو دیدو، گا تو تم۔ دتوا، گا تو
یتہ منہ سس پتہ، یہ مم، دیو یگیم سواہ، واتے واہ۔

दशभिर्जन्मचरितं शतेन तु पुरा कृतम्
त्रियुगं तु सहस्रेण गायत्री हन्ति किल्बिषम्

ओं नमः प्राच्यै दिशे याश्च देवता एत-
स्यांप्रतिवसन्त्येताभ्यश्च वो नमः ।

पूर्वदक्षिणकोणको नमोऽवान्तरायै दिशे याश्च
देवता एतस्यां प्रति वसन्त्येताभ्यश्च वो नमः ।

दक्षिणको ओं नमो दक्षिणायै दि० । दक्षिणप-
श्चिमकोणको ओं नमोऽवान्तरायै दि० ।

पश्चिमको ओं नमः प्रतीच्यै दि० । पश्चिमोत्तर
कोणको ओं नमोऽवान्तरायै दि० । उत्तरको

ओं नम उदीच्यै दि० । पूर्वोत्तरकोणको ओं
नमोऽवान्तरायै दि० । उपरको ओं नम ऊ-

र्ध्वायै दि० । नीचेको ओं नमोऽधरायै दि० ।
तर्पण करें:

دشہ ہزار جنم چریت شتہ نہ تو، پورا کرتی۔ تریوگم۔ تو سہ ہزار۔

تیسری ہزار، تو، پور کر کے پڑھیں۔

ادم نماہ۔ پراچئے دیشے۔ یا شیخ دیوتا یے تسیام، پرتی دسن تی۔

یے تا بھی شیخ دونماہ۔ پورب دکھن کو نکار کرتے ہوئے پڑھیں۔

نوا، اوترائے، دیشے، یا شیخ، دیوتا، یے تسیام، پرتی دسن تی۔

یے تا بھی شیخ دونماہ۔

ایسے ہی دکھن کو:- ادم نو دکھنیاے دیشے یا شیخ ... دونماہ

دکھن یکھم گون کو:- ادم نو اوترائے، دیشے یا شیخ .. دونماہ

یکھم کو:- ادم نماہ پرتی چئے دیشے یا شیخ دونماہ

اثر کو:- ادم نماہ اودی چئے دیشے یا شیخ دونماہ

اوپر کو:- ادم نماہ اور دھائے دیشے یا شیخ دونماہ

نیچے کو:- ادم نو ادھرائے دیشے یا شیخ دونماہ۔ تریپ کرین

— उ० नमो ब्रह्मणे । नमो अस्त्वग्नये ।

नमः पृथिव्यै । नम ओषधीभ्यः । नमो वाचे ।
नमो वाचस्पतये । नमो विष्णवे । बृहते कृणो-
मि ॥ इत्येतासामेव देवतानां साष्टिं सायु-
ज्यं सलोकतां सामीप्यमाप्नोति । य एवं
विद्वान् स्वाध्यायमधीते ॥ माथेको छिडकें ।
यज्ञोपवीतको गर्दन और दाईं भुजामें रखकर जल देवें-
सव्येन । नमो देवेभ्यः । यज्ञोपवीतको गर्दन
और दो अंगूठोंमें रखकर जल देवें:— कण्ठोपवीती
स्वाहा ऋषिभ्यः । यज्ञोपवीतको गर्दन और बाईं
भुजामें रखकर जल देवें:— अपसव्येन । स्वधा
पितृभ्यः । यज्ञोपवीतको दाईं भुजा और गर्दनमें
रखकर जल देवें:— सव्येन । आब्रह्मस्तम्भप-
र्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरम् । जगत्प्यतु ३
एवमस्तु ॥

اوم نمبر ہمنے۔ نواستوا گئیے۔ نماہ پر عقویے۔ نماہ۔ اوشدھی
بھیاد نمودا ہے۔ نمودا چیتے۔ نمودشنوے۔ برہمتے کرنوی۔ پتی
یے تاسا یے و، دیوتا نام، سارشم۔ سا یوجیم۔ سہ لوکت م سامی
پیم۔ اپنوتی یہ دم، دد دان، سوا دھیام ادھاتی رہاتھے کہ چکرکیں
اب یکنو پوت گردن اور دائیں بھو جا میں رکھ کر جمل دیویں۔ کنٹھو
پہ دی تی سوا ہارشی بھیاہ۔ یکنو پوت کو گردن اور بائیں بھو جا
میں رکھ کر جمل دیویں۔ اپہ سہ دینہ۔ سودھا پتر بھیاہ۔ یکنو پوت
دائیں بھو جا اور گردن میں رکھ کر جمل دیویں:۔ سہ دینہ آہرہس
نمبہ پریشتم، برہمانڈم، سچراچرم۔ جگت ترپیتو، ترپیتو، ترپیتو
یے دم، استو ۳ سورہ بھگوان کو ارکھیہ دیتے ہوئے پڑھیں:۔
نود مہرہ نڈانائے، نماہ شو کرتے، ساکھینے۔ نماہ پڑکھیشہ دیو کے
بھاسکرائے۔ نو نماہ ۳

जलसे अर्घ्य देकर नमस्कार करें:—

नमो धर्मनिदानाय नमः सुकृतसाक्षिणे ।
नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः ॥

[गायत्रीकी प्रार्थना]

ओं दुर्निवारभवध्वान्तध्वसनककृतक्षणाम् । नौ-
मि मोहविनाशाय भीतो ब्रह्मादिदेवताम् ॥ दुर्गतिं
हर मे देवि बहुजन्मशतार्जिताम् । प्राप्य कल्पत-
रुच्छायां कथं संतप्यते जनैः ॥ पश्य मामाशु गा-
यत्रि विभ्रान्तं स्निग्धचक्षुषा । न बालमवलं पुत्रं
मुञ्चत्यग्रगमऽम्बिका ॥ एहि मां पाणिपद्मेन देहि
तूर्णं वरं शुभम् । महामोहाकुलं पुत्रं देवि मां स्पृ-
श नित्यशः ॥ मातः प्रतीक्षते नार्तो यत्तदाशु
प्रसीद मे । धृताक्षसूत्रं सावित्रि निर्विघ्नं पश्य मा-
मिह ॥ शृण्वतो नान्यकृत्यं स्यात्तत्त्वं परहितं कुरु ।
ब्रह्मविष्णुहराद्यास्त्वामाश्रयन्ति सुरेश्वरि ॥

گائتری کی پراخت

۱) اوم دُور نور بند، دوهانسه، دوهانسه، نیکہ کرتے کہیں نوری
موبہ وناشلے، ابھی تو بڑھا دیو، تام (۲) دُور گیتم ہرے دیوی
بہوجنہ شتار جت م پر پائے، کلہ تر دُجھایام، کھتم سن تہ پیتے
جنیے (۳) پشیم، ام اشو گائتری، دوجھانتم، سنگدھ پکھوت۔
نہ بالم اہلم پترم، مونچہ تے گرگم امبہ کا (۴) ایے ہی ام، پانی پیتے
فے ہی۔ تو نغم، درم شجھم، جھامو کھم، پترم، دیوی، ام پیرشہ
نیتشہ (۵) ماتاہ پرتی کھیتے، نار تو، بیت ت آشو، پرسیدے
دھرتا کھیم، سوترم، سادتری۔ بڑو گھتم، پشیم، ام ہیہ (۶) شرنو تو
نایہ کرتیم، سیات، ت قوم، پترم کو دورو، برھہ وشنو ہرادیہ
توام، آشرنیتی، شو یے شوری۔

ادم شنتی شنتی شنتی

अथ ब्रह्मविद्या पाठः ॥

ब्रह्म विद्या

ओं उं उँ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर मोहं मिन्द्रि रज-
स्तमसी मिन्द्रि प्राकृतं पाशजालं सावरणं परिहर
सत्त्वं ग्रहाण पुरुषोत्तमोऽसि सोमसूर्यानल प्रवर परम-
धामन्ब्रह्मविष्णुमहेश्वररूप सृष्टिस्थितिसंहारकारक भू-
मध्यनिलय तेजोऽसि धामासि महात्मन् ओं तत्सत् ३
ओं हंसः शुचिषट्सुरन्तरिक्षसद्बोतावेदिषदतिथिर्दुरो-
णसत् नृषद्वरसद्वतसद्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रि-
जा ऋतम् परम्ब्रह्मस्वरूप सर्वगत सर्वशक्ते सर्वेश्वर
सर्वग्रन्थिभेदनं कुरु २ परमंपदं परामर्श ब्रह्मद्वारं सर
कुमार्गं जहि षाट्कोशकं शरीरं त्यज शुद्धोसि बुद्धो-
सि विमलोसि क्षमस्व स्वपदमासादय स्वाहा ॥
ओं हंसो नारायणः प्रोक्तो हंस आत्मेति निश्चितम् ।
स एवात्मा स भगवान्विष्णुस्तद्ब्रह्मसर्वगम् ॥ इमां
महाब्रह्मविद्यां प्रातः काले पठेत्तु यः । स याति
परमं स्थानं यत्र गत्वा न शोचते ॥ इति ॥

اوم اوم ترگوته، پورشه، کھتر چپر، موهم، بھندھی رحس
تمسی بھندھی، پرا کر تم، پاشه چالم، سادر تم، پیر ہر سہ توہم،
گر یانہ، پرشوتوموسی، سومہ سور یا نلہ، پیر در، پیر مہ دھان
برہمہ وشنو، ہیشور روپ، سرشٹی، ستھی تھی۔ سم ہار،
کار کہ، کھرو مہ ہیہ، نلیہ، تیجوسی، دھاماسی مہاتمن اوم
تت ست۔ اوم ہنساشو پھیشت، دسورنہ رکھیست،
ہوتا، ویدیشت، اتی تھر، دورونہ ست نرشت، درست

کرم کارا ڈیپک

کرم کا نڈ دیپک چھپ گیا!
حسین

ستہ نارائن پوجا - جنم دن پوجا - بنیاد مکان پوجا
پردیش پوجا - دیپ مالا بیکھا ماسن دیو پکیر
شرادھ سنگاپ - تھ شورتی پوجا وغیرہ
ہندی اور اردو میں ستار پودک بھی گئی ہیں

विजयेश्वर
प्रयाति

कार्यालय

बिजविहारा (काश्मीर)

برتہ ست، دیومہ ست، اسی، گوجا، رتی جا ادربجا، برتم،
پر برہم سوروپ، سروکتہ، سرو شکھتے سرویشور، سرو گرتھی
بھیدنم کو رو، کو رو، پر مم پدم پر امرشہ، برہمہ دوارم،
سرو کو مار گم جی، شٹ کو شکم، شریرم، تیجہ، شودھوی
بدھوسی ویلوسی، کھیسو، سو پدم آساداتے سواہا -
اوم ہنسو، نارایناہ، پروکتو، ہنس، آتمیتی، شچیم،
سہ یے و، آتما، سہ بھگوان، ویشنوس -

تت برہمہ سروگم - یمام برہمہ ویدیا م، پرانا کالے
پٹھیت تو یاہ، سہ، یاتی، پر مم، ستھانم، تیر، گتا
نہ، شو جتے - تیتی -



Price Re. 1

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय से छपी हुई सभी पुस्तकें और जन्म-पत्रियां आदि "गोविन्द नवधारा गणपतधारा श्रीनगर" से आप को हर समय मिल सकती हैं ।